श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

भागवत महापुराण में प्रयोग होने वाले कुछ महत्वपूर्ण छंद तथा उनकी जानकारी

छन्द

श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

भागवत महापुराण में प्रयोग होने वाले कुछ महत्वपूर्ण छंद तथा उनकी जानकारी

छन्द

छन्द -"यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः"

छन्द के महत्व

- छन्द से हृदय को सौंदर्य का बोध होता है।
- छन्द मानवीय भावनाओं को दर्शाता करते हैं।
- छन्द में स्थायित्व की भावना होता है।
- छन्द सरल होने के कारण मन को भाते हैं।
- छन्द के निश्चित आधार होने के कारण वे सुगमता पूर्वक याद हो जाता हैं।

छन्द के दो प्रकार होते हैं।

- वैदिक छन्द
- लौकिक छन्द

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
तस्मात्सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥

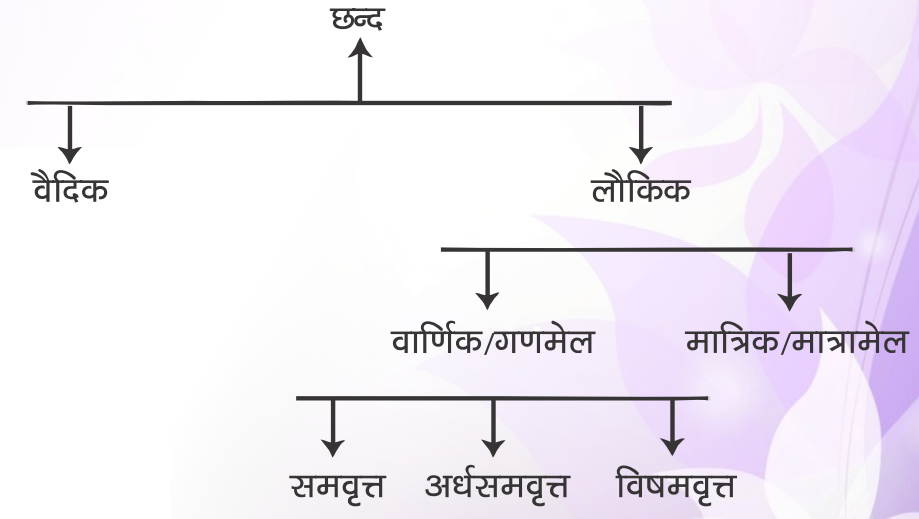

समवृत्त - छन्द के चारों चरणों में अक्षरों की संख्या समान हो तो उसे समवृत्त छन्द कहते हैं।

अर्थसमवृत्त - छन्द के चारों चरणों में से प्रथम और द्वितीय और तृतीय और चतुर्थ पाद के अक्षरों की संख्या समान हो तो उसे अर्धसमवृत्त छन्द कहते हैं।

विषमवृत्त - छन्द के चारों चरणों में अक्षरों की संख्या समान न हो तो विषमवृत्त कहते हैं।

पाद - पाद अर्थात चरण। पाद का अर्थ चतुर्थांश होता है ।श्लोक में प्रायः चार पाद होते हैं।

नामसङ्कीर्तनं यस्य, सर्वपापप्रणाशनम् ।
प्रणामो दुःखशमनस् , तं नमामि हरिं परम्

विषमपाद - छन्द का प्रथम तृतीय पाद विषम पाद होता है।

समपाद - छन्द का द्वितीय चतुर्थ पाद समपाद होता है।

अक्षर - भाषा के छोटे एकम को अक्षर कहते हैं। जैसे स्वर और व्यंजन।

स्वर - जो बिना किसी की सहायता से बोले जाएं वह स्वर है। जैसे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ ।

व्यंजन - जिसके उच्चारण मे स्वर की आवश्यकता होती है। जैसे कि क ख ग घ-ह।

लघु - । (1 मात्रा)

गुरु - S (2मात्रा)

सानूस्वारश्च दीर्घश्च वीसर्गी च गुरुर्भवेत ।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा।।

अनुस्वार से युक्त (अं कं सं हं इत्यादि), विसर्गान्त (अः, कः रामः, इत्यादि), दीर्घ (आ ई का ची इत्यादि), जिसके पर में संयोग हो (पुष्प,विष्णु,कृष्ण इत्यादि), ऐसे वर्ण गुरु हैं। पादान्त में स्थित वर्ण चाहे वह ह्रस्व या दीर्घ कैसा भी हो विकल्प से गुरु माना जाता है इससे अन्य जो भी है ऐसा १ मात्रा वाला लघु माना जाता है।

छंद के अंग

वर्ण मात्रा गति यति तुक चरण गण

वर्ण वह मूल ध्वनि जिसका खण्ड न हो।जैसे-अ इ ई क् ख् इत्यादि।

मात्रा – (लघु I गुरु S) यहां अक्षर की मात्रा गिनी जाती है। लघु अक्षर की एक मात्रा और गुरु अक्षर की दो मात्रा होती है मात्रा को जाती भी कहते हैं।

गति - छन्द को पढ़ते समय जिस लय या प्रभाव का प्रयोग किया जाता है उसे गति कहते हैं।

यति - पद्य में पाठ करते समय गति को तोड़कर जो विश्राम दिया जाता है उसे ही यति कहते हैं।

तुक - पाद के अन्त में rhyming words.उदाहरण-नीर –धीर

चरण - श्लोक में पराया चार चरण होते हैं।

गण - छन्द शास्त्र में तीन अक्षर के समूह को गण कहते हैं। ३ अक्षरों को भिन्न प्रकार से लघु गुरु में रखकर भीमनगर बनाए जाते हैं।

गण(वृत्त) मेल - गणों के मेल से जो छन्द बनता है उसे गण मेल कहते हैं यहां अक्षरों की नियत संख्या पर गणों की रचना की जाती है। तीन तीन अक्षर के गण बनाए जाते हैं।

सूत्र: य मा ता रा ज भा न स ल गा (लघु I, गुरु S)		
य गण	यमाता	ISS
म गण	मातारा	SSS
त गण	ताराज	SSI
र गण	राजभा	SIS
ज गण	जभान	ISI
भ गण	भानस	SII
न गण	नसल	III
स गण	सलगा	IIS
ल	ल	I
ग	ग	S

छन्द के प्रकार एवं अक्षर

छन्द		
1	उक्ता (एकाक्षर पाद वाले)	1
2	अत्युकता	2
3	मध्या	3
4	प्रतिष्ठा	4
5	सुप्रतिष्ठा	5
6	गायत्री	6
7	उषणिग्	7
8	अनुष्टुप	8
9	बृहती	9
10	पंक्ति	10
11	त्रिष्टुप	11
12	जगति	12
13	अतिजगती	13

छन्द		
14	शक्वरी	14
15	आतिशक्वरी	15
16	अष्टि	16
17	अत्यष्टि	17
18	धृति	18
19	अतिधृति	19
20	कृति	20
21	प्रकृति	21
22	आकृति	22
23	विकृति	23
24	संकृति	24
25	अतिकृति	25
26	उत्कृति	26

अनुष्टुप

- छन्द – अर्धसमवृत
- अक्षर – 8 अक्षर
- यति – 8

लक्षण

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्वि चतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमी दीर्घ मन्ययो:।।

इंद्रवज्रा

- छन्द – समवृत
- अक्षर – 11 अक्षर
- जाति – त्रिष्टुप
- यति – पादन्ते होगी।
- लक्षण – स्यादिनद्रवज्रा यदि तौ जगौ ग:।
- इसके प्रत्येक चरण में तगण तगण जगण ग ग होता है।

उदाहरण

शिवपंचाक्षरस्तोत्र
नागेंद्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।

उपेन्द्रवज्रा

- छन्द – समवृत
- अक्षर – 11 अक्षर
- जाति – त्रिष्टुप
- यति – पादन्ते होगी।

उदाहरण

नमो नमस्तेऽखिलकारणाय,
निष्कारणायाद्भुतकारणाय।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय,
नमोऽपवर्गाय परायणाय॥ (15) G.M

- लक्षण – उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।
- इसके प्रत्येक चरण में जगण तगण जगण ग ग होगा।
- यति पादान्ते होगी।

उपजाति

- मिश्रित छन्द – इंद्रवज्रा +उपेंद्रवज्रा
- अक्षर – 11 अक्षर
- लक्षण – अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः
  इत्थं किलन्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्वदमेव नाम।।
- जिनके चरण उपर्युक्त इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के लक्षण वाले (बिना किसी क्रम से) हों उन छंदों का नाम उपजाति है।
- उक्त छंदों के आगे पीछे का कोई सुनिश्चित क्रम नहीं है जैसा आगे दिए गए उदाहरणों से स्पष्ट होगा।
- पिंगलच्छन्दसूत्र की हलायुद्ध वृत्ति में इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से विशेष नामो सहित 14 भेदों का उल्लेख किया गया है।

उदाहरण

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्यात्मना वा
प्रकृतेस्स्वभावात्।
करोमि यद्यत् संकलन परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि।।

इंदिरा

- छन्द – समवृत्त
- ललित और कनकमंजरी
- अक्षर – 11 अक्षर
- राजहंस छंद से प्रसिद्ध है
- यति – पादान्ते
- लक्षण – हि नररालगैरीन्दिरा स्मृता।
- गण – नगण रगण रगण ल ग

उदाहरण

गोप्य ऊचुः
जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः,
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्-
त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥ 1॥ G.G

वसंततिलका

- छन्द – समवृत्त
- अक्षर – 11 अक्षर
- जाति – शक्करी
- यति – 8/6
- लक्षण – उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौगः।
- इसके प्रत्येक चरण में तगण भगण जगण जगण ग ग होता है।

उदाहरण

सोऽन्तः सरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो,
दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम्।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रान्-
नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते॥32।। G.M

स्रग्विणी

- छन्द – समवृत्त
- अक्षर – 12 अक्षर
- जाति – जगती
- यति – पादान्ते
- लक्षण – कीर्तितेषा चतूरेफिका स्रग्विणी।
- इसके प्रत्येक चरण में रगण रगण रगण रगण होता है।

उदाहरण

अच्युतं केशवं राम नारायणम्
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपीका वल्लभम्
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे।।

शार्दूलविक्रीडित छंद

- छन्द – समवृत्त
- जाति – अतधृति
- अक्षर – 19 अक्षर
- यति – 12/7
- लक्षण – सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दुलविक्रीडितम्।
- इसके प्रत्येक चरण में मगण सगण जगण सगण तगण तगण ग होगा।
- यति सूर्य 12 और अश्व 7 पर होगी।

उदाहरण

सरस्वती वंदना
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निः शेषजाड्यापहा।।

मंदाक्रांता

- छन्द – समवृत्त
- जाती है
- अक्षर – 17 अक्षर
- यति – 4/6/7
- लक्षण – मंदाक्रांता म्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।
- इसके प्रत्येक पाद में मगण भगण नगण तगण तगण दो गुरु होते हैं।
- संबोधी (सागर)4 रस 6 नगः (पर्वत) 7 (4/6/7) अक्षर पर यति होती है।

उदाहरण

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभमं सुरेशम्
विधाधरं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभाङ्गम्
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृद्ध्यानगम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

शिखरिणी छन्द

- छन्द – समवृत
- अक्षर – 17
- जाति – अत्यष्टि
- यति – 6/11
- लक्षण – रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलाग:शिखरिणी।
- इसके प्रत्येक चरण में यगण मगण नगण सगण भगण लघु गुरु।
- रस 6 रूद्र 11

उदाहरण

देवी अपराध क्षमापन स्तोत्र

चिताभस्मालेपो, गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे, भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो, भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणि-ग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥7॥

जगती

- जगती
- Total – 48 अक्षर
- 4 पाद, प्रत्येक पाद में 12 अक्षर
- उपभेद

a) उपजगातिटोटल 46 अक्षर 4 पाद 12+12+11+11=46

b) महासतोबृहती-Total - 48 अक्षर 5 पाद 8+8+8+12+12=48

c)महापंक्तिजगति-Total-48 अक्षर 6 पाद 8+8+8+8+8+8=48

उदाहरण

नमस्त आशिषामीश, मनवे कारणात्मने।
नमो धर्माय बृहते, कृष्णायाकुण्ठमेधसे।
पुरुषाय पुराणाय, सां ख्ययोगेश्वराय च ॥ 42 R.G

Chhand at a Glance

1	अनुष्टुप	8	8	8	8	=	32 syllables
2	त्रिष्टुप	11	11	11	11	=	44 syllables
3	गायत्री	6	6	6	6	=	24 syllables
4	बृहती	8	8	12	8	=	36 syllables
5	महा पंक्ति जगती	16	16	16	-	=	48 syllables
6	उष्निक	8	8	12	-	=	28 syllables
7	जगती	12	12	12	12	=	48 syllables
8	वसंततिलका	14	14	14	14	=	56 syllables
9	मन्दाक्रांता	17	17	17	17	=	68 syllables
10	स्रग्विणी	12	12	12	12	=	48 syllables
11	इंदिरा	11	11	11	11	=	44 syllables
12	उपजाति	11	11	11	11	=	44 syllables

समवृत्तछन्द

क्रम	छन्द	अक्षर	गण	लक्षण
1	अनुष्टुप	8	-	श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमी दीर्घमन्ययो:।।
2	इंद्रवज्रा	11	ततजगग	स्यादिनद्रवज्रा यदि तौ जगौ ग:।
3	उपेंद्रवज्रा	11	जतजगग	उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।
4	उपजाति	11	-	अंतरोदीरितलक्ष्मभाजौपादौ यदीयावुपजातयस्ताः इत्थं किलन्यास्वपि मिश्रितासुवदन्ति जातिष्वदमेव नाम।।
5	स्रग्विणी	12	ररर	कीर्तितेषा चतूरेफिका स्रग्विणी।
6	वसंततिलका	14	तभजजगग	उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।
7	मन्दाक्रांता	17	मभनततगग	मंदाक्रांता म्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।
8	शार्दुलविक्रीडित	19	मसजसततग	सूर्याश्वैर्यदि म: सजौ सततगा: शार्दुलविक्रीडितम्।
9	इंदिरा	11	नररलग	हि नररालगैरीन्दिरा स्मृता
10	शिखरिणी छन्द	17	यमनसभलग	रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलाग:शिखरिणी।